इतिहास का साम्राज्यवादी उपागम

(IMPERIALIST APPROACH OF HISTORY)

डॉ.विश्वजीत सिंह परमार

प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व अध्ययनशाला,
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन(म.प्र.)

(एम.ए. II सेमेस्टर)

प्रस्तावना :

अतीत को जानने और समझने की अभिलाषा मनुष्य मात्र का नैसर्गिक स्वभाव है| इस प्रकार की जिज्ञासा से ही इतिहास का जन्म होता है| इस प्रकार प्राचीन काल से ही विश्व के सभी सभ्यताओं में अतीत को जानने तथा समझने की जिज्ञासा रही है तथा इसी जिज्ञासा के कारण हम प्राचीनकाल से ही विकासमान मानव समाजों में इतिहास का प्रारंभ और विकास पाते हैं| युग की गतिशीलता के कारण सामाजिक आवश्यकताओं का स्वरुप या तो विकसित होता रहा अथवा परिवर्तित| वस्तुतः समाज की आवश्यकताएं इतिहास की अवधारणा का मुख्य आधार होती है और इतिहासकार द्वारा इन्हीं सामाजिक आवश्यकताओं के परिवेश में इतिहास लिखा जाता है|

अतः हम कह सकते हैं कि सामाजिक आवश्यकता इतिहासकार की इतिहास सम्बंधी अवधारणा को प्रभावित करती है| इतिहासकार अपने युग के दृष्टिकोण तथा अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण से अतीत की घटनाओं को देखता है और चूंकि इतिहासकार का व्यक्तिगत दृष्टिकोण समय के साथ बदलता रहता है, इसी कारण उसके युग-युगीन इतिहास के प्रति भी विचारों में परिवर्तन दिखाई देता है| प्रारंभ में विद्वानों ने इतिहास के प्रति धर्मवादी दृष्टिकोण को अपनाया परंतु कालान्तर में सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप

इतिहासकारों ने इतिहास के प्रति प्राच्यवादी एवं साम्राज्यवादी दृष्टिकोण को अपनाया|

इतिहास के साम्राज्यवादी उपागम(दृष्टिकोण) के प्रारंभ की पृष्ठभूमि :

मानव सभ्यता के प्रारंभ में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव में इतिहास लेखन धर्म से अत्यधिक प्रभावित था, जिसके कारण पृथक्-पृथक धार्मिक अवधारनाओं का विकास हुआ और प्राय: मध्यकाल तक सम्पूर्ण विश्व में इतिहास लेखन में धर्म सम्बंधी उपागम पर अधिक बल दिया गया| इतिहास की प्रत्येक घटना, उत्थान-पतन तथा जय-पराजय के मूल में ईश्वरीय इच्छा को विशेष रूप से उत्तरदायी माना गया| बात चाहे हिन्दू(भारतीय) धर्म, ईसाई धर्म या यहूदी धर्म की हो अथवा पारसी, इस्लाम या कोई अन्य धर्म की, सभी धर्मों ने इतिहास में दैवी विधान देखा जिसमें व्यक्ति कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकता|

जैसा कि लार्ड मैकाले ने कहा था कि यदि किसी देश को गुलाम बनाना हो तो उस देश की संस्कृति एवं सभ्यता को विकृत कर वहां के जनमानस में हीन भावना भर दो| इसी मानसिकता से

प्रेरित होकर ब्रिटेन के उपयोगितावादी विचारकों जेम्स मिल, वी.बी मैकाले, शिरोल आदि ने इतिहास के साम्राज्यवादी उपागम को अपनाया ताकि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की जड़े मज़बूत हों और उसे स्थायित्व एवं द्रढ़ता प्रदान की जा सके| उनकी दृष्टि में समकालीन भारतीय समाज अत्यधिक पिछड़ा हुआ था, अतः उसका कल्याण एवं हित अंग्रेजों के अधीन रहने एवं पश्चिमीकरण का मार्ग अपनाने में ही है|

इतिहास के साम्राज्यवादी उपागम का विकास:

इतिहास के साम्राज्यवादी उपागम के विकास में प्लासी एवं बक्सर के युद्धों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही| वस्तुतः युद्धों के बाद भारत में ब्रिटिश शासन की जड़े मज़बूत होनी शुरू हुईं और अंग्रेजों ने शासन संचालन की सुविधा एवं प्रचार-प्रसार की दृष्टि से भारतीय इतिहास की ओर दृष्टिपात किया और अपने साम्राज्यवादी हितों को ध्यान में रखते हुए भारतीय इतिहास लेखन को प्रेरित किया|

इस प्रकार साम्राज्यवादी इतिहास लेखन की परंपरा का धीरे-

धीरे विकास होता गया|

इतिहास का साम्राज्यवादी उपागम :

उन्नीसवीं सदी में यूरोपीय देशों की बढ़ती हुई उपनिवेशवादी प्रवृत्ति के फलस्वरूप इतिहास के साम्राज्यवादी उपागम को बढ़ावा मिला| इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि उपनिवेशवादी एवं विस्तार वादी शक्तियों ने एशिया, अफ्रीका एवं अमेरिका के विभिन्न भागों पर अपना राजनैतिक, आर्थिक, सैनिक एवं सांस्कृतिक आधिपत्य स्थापित करने के लिए विभिन्न उपायों का सहारा लिया| उन्हीं उपायों में से एक था इतिहास के साम्राज्यवादी दृष्टिकोण को बढ़ावा देना जिसकी झलक हमे लोएस डिकिन्सन, कूपलैंड आदि के विचारों में मिलती है| लोएस डिकिन्सन ने कहा-"हिन्दू इतिहासकार नहीं थे"| आर.कूपलैंड ने कहा कि-" भारतीय राष्ट्रवाद तो अंग्रेजी राज की ही संतति है| 1884 ईसवीं में जॉन स्ट्रेची ने कैंब्रिज विश्वविद्यालय के छात्रों को संबोधित करते हुए कहा था कि- भारत के विषय में जानने योग्य सबसे पहली तथा प्रमुख बात

यह है कि भारत न एक है, न एक था और न कभी एक होगा| वस्तुतः जेम्स मिल, लार्ड मैकाले, ग्रांट डफ तथा एल्फिंस्टन जैसे अनेक साम्राज्यवादी इतिहासकारों ने भारत को एक देश नहीं अपितु एक उपमहाद्वीप माना तथा भारत में राष्ट्र शब्द का प्रयोग नकारात्मक रूप में किया| इस प्रकार साम्राज्यवादी इतिहासकारों ने अपने लेखन के द्वारा निम्नलिखित दो बातों को सिद्ध करने का प्रयास किया-

प्रथम तो यह कि यूरोप(अंग्रेज़) आदि के लोग भारतीयों से प्रत्येक मामले में श्रेष्ठ हैं, दूसरी, भारत के लिए प्रत्येक क्षेत्र में ब्रिटिश शासन ईश्वरीय वरदान के समान है| जॉन स्ट्रेची, मालेसन, लार्ड मैकाले, विन्सेंट स्मिथ जैसे अनेक साम्राज्यवादी इतिहासकारों का विचार था कि 'भारत एक राष्ट्र की अपेक्षा अलग-अलग धर्मों, जातियों एवं कबीलों वाला देश है जहाँ राजनीतिक फूट, छुआछूत, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता का बोलबाला है| अतः वह अपना स्वयं का शासन संचालित करने में असमर्थ है| अल्फ्रेड लायल ने भी कहा कि ब्रिटिश शासन भारतीयों को स्वयं के शासन के लिए तैयार कर रहा है|

वस्तुतः 1857 ई. की क्रांतिकारी घटना ब्रिटिश साम्राज्यवादी महत्त्वकांक्षा के लिए वज्रपात सिद्ध हुई फ़लस्वरूप, ब्रिटिश

प्रशासक तथा इतिहासकार सजग हो उठे| अब उन्होंने 'फूट डालो और शासन करो' की नीति अपनाई और इसी नीति के तहत इतिहास लेखन पर जोर देना शुरू किया| इन साम्राज्यवादी इतिहासकारों ने 1857 की देशव्यापी क्रांतिकारी घटना को मात्र 'सिपाही विद्रोह' कह कर उसे सामान्य घटना बताने का प्रयास किया और मध्यकालीन भारतीय इतिहास की कुछ दुखद सांप्रदायिक घटनाओं को उद्धृत करते हुए हिन्दू-मुस्लिम एकता को तोड़ने का प्रयास किया ताकि उनके साम्राज्यवादी हितों की पूर्ति हो सके| साम्राज्यवादी इतिहासकारों का भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति भी नकारात्मक दृष्टिकोण रहा है| उनके अनुसार भारत के आंदोलनकारियों का समूह वस्तुतः 'पढ़े-लिखे मुट्ठी भर लोगों का एक स्वार्थी एवं गैर-ज़िम्मेदार समूह है,

जो ब्रिटिश सरकार द्वारा उपलब्ध करायी गयी सुविधाओं का दुरुपयोग करते हुए भारतीय जनता को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भड़काने का प्रयास करता है'|

विपिन चंद ने ठीक ही लिखा है कि साम्राज्यवादी इतिहासकार इस बात को स्वीकार ही नहीं करते कि भारत के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास में ब्रिटिश शासन बाधक बना हुआ है| इसलिए ऐसे उपनिवेशवादी शासन को समाप्त करना

आवश्यक था|

उल्लेखनीय है कि साम्राज्यवादी इतिहासकारों ने प्रायः उन्हीं साक्ष्यों का अनुप्रयोग किया है जो उनकी साम्राज्यवादी दृष्टिकोण के अनुरूप हों| उदाहरणार्थ, विन्सेंट स्मिथ ने अपनी पुस्तक 'अर्ली हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया'(1924) में भारतीय सभ्यता की उन्नत अवस्था एवं भारतीय कला के विकास को यूनानियों की देन बताया है| स्मिथ ने हर्षोत्तरकालीन विखंडित राजनीतिक स्थिति के संदर्भ में साम्राज्यवादी पूर्वाग्रह से युक्त टिप्पणी की कि 'भारत जब भी किसी शक्तिशाली सत्ता के नियंत्रण से मुक्त हुआ, अराजकता के भंवर में फंस गया और यदि वह सद्भावनापूर्ण ब्रिटिश शासन से आज़ाद हो जायेगा तो पुनः अव्यवस्था तथा अराजकता की स्थिति में पहुंच जायेगा| इस प्रकार स्मिथ एक प्रकार से कट्टर साम्राज्यवादी इतिहासकार जेम्स मिल के इस कथन के साथ खड़े दिखाई देते हैं कि वास्तव में हिन्दू नपुंसक थे, जो गुलामी की प्रवृत्तियों से परिपूर्ण, गुलामी के लिए ही बने थे| इसलिए आर.सी. मजूमदार जैसे इतिहासविद को कहना पड़ा कि यूरोपीय विद्वान अपनी जातीय श्रेष्ठता के दुराग्रह से मुक्त हुए बिना भारतीय इतिहास के प्रति न्याय नहीं कर सकते|

इतिहास के साम्राज्यवादी उपागम की झलक हमें इलियट

एवं डाउसन की पुस्तक ‘ए हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया ऐज टोल्ड बाय इट्स ओन हिस्टोरियन’ में भी दिखाई देती है जिसमे उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि मध्यकालीन भारत में हिन्दुओं का दमन किया गया एवं जो सुविधायें उन्हें मध्य युग में मुस्लिम शासकों की धार्मिक कट्टरता की नीति के कारण नहीं मिलीं,वह ब्रिटिश शासन के अदीन उन्हें प्राप्त होंगी|

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि साम्राज्यवादी इतिहासकारों के इतिहास लेखन का उद्देश्य भारतीयों के लिए किसी भी प्रकार से ब्रिटिश शासन की उपयोगिता सिद्ध करना था ताकि भारत में ब्रिटिश शासन को दृढ़ता प्रदान की जा सके|

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में इतिहास के साम्राज्यवादी उपागम के संदर्भ में अनिल सील एवं उनके अनुयायिओं का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने अनुदारवादी दृष्टिकोण को अपनाते हुए भारत के राष्ट्रीय आंदोलन को जन आंदोलन नहीं अपितु अभिजन समूहों का आंदोलन कहा, जिसे उन्होंने अपने संकीर्ण स्वार्थों के लिए किया था|